स्त्री शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्त्व
(Need and Importance of Women's Education)

वेदों में स्त्री के गौरव का, उसके गुणों का, उसके कर्त्तव्य और अधिकारों का विशद वर्णन है। इस प्रकार का वर्णन संभवतः संसार के किसी भी धर्मग्रन्थ में नहीं है। मनुस्मृति, 3-56 में कहा गया है—

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तजाफलाः क्रियाः॥

(जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का निवास होता है। जहाँ इनका आदर नहीं होता या इनका अपमान होता है, वहाँ सारे धर्म-कर्म निष्फल हो जाते हैं।)

Scanned by TapScanner

ऋग्वेद (2-19-17) में कहा गया है कि स्त्रियों पर ही जीवन आधारित है और वे शिक्षा प्रदान करती हैं।

महर्षि दयानन्द ने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहा है कि राष्ट्र, समाज, प्रशासन तथा परिवार के क्रिया-कलाप तब तक उचित ढंग से नहीं किये जा सकते, जब तक कि स्त्रियों को शिक्षा न मिले। यदि समाज में स्त्रियाँ शिक्षित नहीं होंगी, तब परिवार में सुख-शान्ति, बच्चों का उचित पालन-पोषण नहीं हो सकेगा और छात्राओं को विद्यालय के लिए महिला शिक्षिकाएँ भी उपलब्ध नहीं होंगी। इसलिए स्त्रियों का शिक्षित होना अनिवार्य है।

स्वामी विवेकानन्द परिवार, समाज व देश सभी की उन्नति के लिए स्त्रियों को शिक्षित करना अनिवार्य मानते हैं। उनका कहना है कि समस्त जनसंख्या का आधा भाग स्त्रियाँ होती हैं, अतः समाज की उन्नति के लिए यह आवश्यक है कि सम्पूर्ण मानव जाति कुशल व प्रशिक्षित रहे, क्योंकि यदि स्त्रियाँ अकुशल व अशिक्षित होंगी, तब पुरुष वर्ग भी अकुशल ही होगा, क्योंकि स्त्रियाँ एक अच्छी माता तभी बन सकती है, जब वह शिक्षित हों। हमारे देश के पतन का कारण यही है कि हमने इन सभी सजीव प्रतिमाओं के प्रति आदर व श्रद्धा को खो दिया है, जबकि अन्य अनेक देशों में उनको समान आदर प्राप्त होता है और इसी कारण वे उन्नत हैं, विद्वान हैं, स्वतंत्र और शक्तिशाली हैं।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ज्ञान के क्षेत्र में स्त्री व पुरुषों दोनों के बीच किसी प्रकार के भेदभाव को स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि स्त्रियों को परिपक्व प्राणी बनने के लिए विशुद्ध ज्ञान प्राप्त करना चाहिए तथा एक आदर्श पत्नी व माँ बनने के लिए उपादेय ज्ञान भी प्राप्त करना चाहिए, क्योंकि यह उनका मूल स्वभाव है। इसलिए उपयोगी ज्ञान उनके जीवन का आधारभूत ज्ञान होगा। उन्होंने कहा कि उन स्त्रियों के लिए जो विद्यालय में दी गई सुविधाओं को किसी कारणवश प्राप्त नहीं कर पातीं, उनके लिए घर पर अध्ययन की योजना चलायी जानी चाहिए और इसके लिए शहरों तथा कस्बों में शिक्षा केन्द्र खोले जाने चाहिएँ।

श्री अरविन्द ने बालक-बालिकाओं को एक समान शिक्षा देने पर बल दिया और उनके पाठ्यक्रम में किसी प्रकार का अन्तर नहीं रखा। उनके अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र में सभी साधक व साधिकाएँ पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए एक समान शिक्षा प्राप्त करते हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी स्त्री को पत्नी-माता, मानव-निर्माता और समाज सेविका के रूप में देखते हैं। वह उसको ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति मानते हैं, इसलिए वे स्त्रियों की स्थिति को सुधारने में अत्यधिक रुचि लेते हैं। उनका कथन है कि अक्षर ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, क्योंकि इससे बुद्धि बढ़ती है और तेज होती है तथा परमार्थ करने की शक्ति बहुत बढ़ जाती है। पुरुषों के समान सामान्य जीवन के अधिकार प्राप्त करने और इनको काम में लाने तथा जीवन की शोभा बढ़ाने के लिए स्त्रियों के लिए भी शिक्षा बहुत आवश्यक है। शिक्षा के बिना उस आनन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती, जो ज्ञान और विद्या के भण्डार से भरा हुआ है। इसलिए पुरुषों के समान ही स्त्रियों को भी शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

महामना पंडित मदनमोहन मालवीय माँ को प्रथम गुरु मानते हैं। बालक की प्रारम्भिक आधारभूत शिक्षा उसके परिवार में, उसकी माता के द्वारा होती है, अतः इस बात की परम आवश्यकता है कि सर्वप्रथम माँ को शिक्षित किया जाए, जिससे वह राष्ट्र के लिए कुशल नागरिक तैयार करने में अपना अमूल्य योगदान दे सके। माँ के समान कोई दूसरा शिक्षक नहीं है, इसलिए देश को जिस दिशा में ले जाना हो, उसी प्रकार की शिक्षा की व्यापक व्यवस्था स्त्रियों के लिए की जानी चाहिए। स्त्री शिक्षा के द्वारा ही देश के भावी कर्णधारों का सम्यक् निर्माण हो सकता है। इस दृष्टि से स्त्री शिक्षा का महत्त्व पुरुषों की शिक्षा से भी अधिक है।

Scanned by TapScanner

आचार्य विनोबा भावे का कहना है कि स्त्रियों को अधिक ज्ञानाभ्यास करना चाहिए, क्योंकि उनको संस्कृति की रक्षा करनी है, प्रकृति से ऊपर उठना है और पुरुषों को भी अपनी प्रकृति से ऊपर उठाने का दायित्व निभाना है, इसलिए उनका ज्ञान गहरा होना चाहिए। इसके लिए उनको साधना करनी चाहिए। उनके अनुसार पुरुष का कार्य तो अन्न की पैदावार करना है, जबकि स्त्रियों को व्यक्तियों का निर्माण और विकास करना है, इसलिए स्त्रियों की शिक्षा पुरुषों से भी अधिक अनिवार्य है।

सर्वपल्लि डॉ० राधाकृष्णन् का कहना है कि पुरुषों की भाँति स्त्रियों का भी शिक्षित होना आवश्यक है, तभी राष्ट्र का निर्माण हो सकता है। शिक्षित स्त्रियों के अभाव में कोई भी समाज शिक्षित नहीं हो सकता। यदि सामान्य शिक्षा पुरुषों अथवा स्त्रियों तक सीमित रखनी पड़े तो स्त्रियों को शिक्षित किया जाना चाहिए, क्योंकि उस स्थिति में शिक्षा स्वयं ही अगली पीढ़ी में पहुँच जाएगी।

श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि किसी भी समाज का स्तर वहाँ की महिलाओं के स्तर से आँका जाता है। महिलाएँ आज भी पुरुष प्रधान समाज में रह रही हैं। उन्हें जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त हर क्षेत्र में इस मानसिकता से गुजरना पड़ता है, चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो अथवा समाज में रहने की बात। महिलाओं का निम्न स्तर अथवा उन्हें विकास की कम सुविधाएँ उपलब्ध कराना समाज को विकलांग बना देता है, इसलिए उनको शिक्षा की सुविधाएँ उपलब्ध करायी जानी आवश्यक हैं।

देश के महान् दार्शनिकों, मनीषियों, शिक्षाविदों और लोकप्रिय प्रधानमन्त्रियों के उपरोक्त कथन यह स्पष्ट करते हैं कि हमारे देश में स्त्री शिक्षा की महती आवश्यकता है। सच तो यह है कि किसी भी समाज और राष्ट्र की उन्नति स्त्री और पुरुष दोनों के शिक्षित होने पर ही सम्भव है। फिर भी इन दोनों—स्त्रियों और पुरुषों—की शिक्षा में स्त्रियों की शिक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि स्त्री ही अपनी कोख से जन्म देकर बच्चों का पालन-पोषण करके समाज और राष्ट्र के लिए महान् वैज्ञानिकों, इंजीनियरों, चिकित्सकों, न्यायाधीशों, व्यावसायियों, समाज सुधारकों और राजनेताओं का निर्माण करती है। अतएव देश में प्रत्येक स्त्री का सुशिक्षित होना परम आवश्यक है। हमारे देश भारत में स्त्रियों के लिए शिक्षा इसलिए आवश्यक है, क्योंकि यह देश एक सौ पच्चीस करोड़ लोगों का देश है, यह दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इसकी आधी आबादी यदि अशिक्षित रहेगी, तो समग्र देश का विकास कैसे होगा? दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कैसे सफल होगा और कैसे जिन्दा रहेगा? स्त्री शिक्षा की आवश्यकता और महत्त्व को निम्नलिखित शीर्षकों में स्पष्ट किया जा सकता है—

(1) पारिवारिक दृष्टि से स्त्री शिक्षा का महत्त्व—एक बार अमेरिकी राष्ट्रपति **लिंकन** ने कहा था, *"मैं जो कुछ भी हूँ और जो कुछ बनने की आशा करता हूँ, उसके लिए मैं अपनी माता का कृतज्ञ हूँ।"* इसी प्रकार **महान् नैपोलियन** ने कहा था, *"बालक का भविष्य सदैव उसकी माता द्वारा निर्मित किया जाता है।"* कहा जाता है कि *"माँ सर्वोत्तम शिक्षक है" (Mother is the best teacher), "माँ बालक की प्रथम शिक्षक है" (Mother is the first teacher of the child)* और *"माँ हजार शिक्षकों के बराबर होती है" (Mother is equal to thousand teachers)*। परिवार में माता का स्थान एवं सम्मान व महत्त्व सबसे अधिक है, क्योंकि वही बालकों को सुशिक्षित करके परिवार का योग्य सदस्य बना सकती है और परिवार के जीवन में सुख-शान्ति की स्थापना कर सकती है। माता ही बालकों में अच्छे विचार, अच्छे भाव, अच्छी रुचियाँ और आदर्श व संस्कार पैदा कर सकती है। इसमें कोई संदेह नहीं कि एक शिक्षित माँ, अशिक्षित माँ की अपेक्षा अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों को अच्छी तरह से समझती है। वह अपनी सन्तान को योग्य बनाने के लिए अशिक्षित माँ की तरह केवल भगवान से प्रार्थना ही नहीं करती। अपितु क्रियात्मक कार्य भी करती है। पत्नी के रूप में भी शिक्षित स्त्री अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने का प्रयास करती है। परिवार में शिक्षित बहन और बेटियाँ भी अपने अनुजों के लिए सहायक हो सकती हैं। परिवार

Scanned by TapScanner

में माँ की भूमिका के सम्बन्ध में **फ्रोबेल** ने कहा है, *"माताएँ आदर्श शिक्षिकाएँ हैं और परिवार द्वारा दी जाने वाली अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली तथा स्वाभाविक है।"*

(2) सामाजिक दृष्टि से स्त्री शिक्षा का महत्त्व—स्त्री शिक्षा का महत्त्व सामाजिक दृष्टि से भी बहुत अधिक है। शिक्षित स्त्रियाँ परिवार के सीमित क्षेत्र से बाहर निकलकर समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। शिक्षित स्त्रियाँ समाज की रूढ़ियों, कुरीतियों, अंधविश्वासों और सड़ी-गली परम्पराओं को समाप्त करके लोगों में वैज्ञानिक और प्रगतिशील सोच पैदा करती हैं। उनके रहन-सहन के ढंग, खान-पान की विधियाँ और व्यवहार प्रतिमान श्रेष्ठ होते हैं। वे समाज में प्रेम, सहयोग, दया, परोपकार, सहानुभूति आदि सामाजिक गुणों का प्रतिष्ठापन करती हैं और सामाजिक न्याय के लिए प्रयास करती हैं। वे वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना से प्रेरित होकर सम्पूर्ण समाज में इस भावना का प्रसार करती हैं।

(3) आर्थिक दृष्टि से स्त्री शिक्षा का महत्त्व—आर्थिक क्षेत्र में दो दृष्टियों से स्त्री शिक्षा का महत्त्व है। एक तो यह कि शिक्षित व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) अशिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा किसी कार्य या व्यवसाय या उत्पादन के क्षेत्र में अधिक कुशल होता है। उसमें कार्यक्षमता अधिक होती है, इसलिए वह अधिक सफल होता है। आजकल अपनी दक्षता और क्षमता के कारण शिक्षित स्त्रियाँ जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं। दूसरे बढ़ती हुई महंगाई के कारण सामान्य व्यक्ति के सामने अपने परिवार के पालन-पोषण की गंभीर समस्या खड़ी हो गई है। एक व्यक्ति के कार्य करने से परिवार का संचालन अच्छी प्रकार से नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में शिक्षित स्त्रियाँ किसी-न-किसी कार्य-व्यवसाय को करके अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में अपना योगदान दे सकती हैं। अविवाहित शिक्षित स्त्रियाँ भी किसी कार्य-व्यवसाय को करके आत्मनिर्भर बनकर स्वाभिमान के साथ अपना जीवन व्यतीत कर सकती हैं।

(4) राजनीतिक दृष्टि से स्त्री शिक्षा का महत्त्व—भारत में प्रजातंत्रीय शासन प्रणाली है। यहाँ स्त्रियों के भी वही कर्त्तव्य और अधिकार हैं, जो पुरुषों के हैं। यहाँ राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने और संसद सदस्यों, विधायकों तथा स्थानीय स्वशासन संस्थाओं के सदस्यों के निर्वाचन में मत देने का अधिकार स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह ही प्राप्त है। अतः स्त्रियों का शिक्षित होना बहुत आवश्यक है, क्योंकि शिक्षित स्त्रियाँ ही जागरुक हो सकती हैं, अपने कर्त्तव्य और अधिकारों को समझकर उनका सही प्रयोग कर सकती हैं, अपने प्रतिनिधियों का सही चयन कर सकती हैं और विभिन्न राजनीतिक दलों की नीतियों और कार्यक्रमों को समझ सकती हैं। वस्तुतः देश के प्रजातंत्र की सफलता में शिक्षित स्त्रियों का योगदान बहुत महत्त्वपूर्ण है।

Scanned by TapScanner